सूत कातने का दृष्टान्त

भट परो तिन नींद को, जिन सोहागनियां दैयां भुलाए।
तो भी नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो धनी थके बुलाए बुलाए।। १ ।।

ऐसी माया (नींद) को आग लग जाए जिसने ब्रह्मसृष्टियों को भुला दिया है। धनी बार-बार बुलाकर थक गए पर इस बेहया नींद ने सुन्दरसाथ को नहीं छोड़ा।

ए नींद अमल कासों कहिए, क्योंए ना छोड़े आतम।
तो भी बेसुधी ना टली, जो जल बल हुई भसम।। २ ।।

इस बेशर्म नींद के नशे को किस से कहें? यह आत्मा को छोड़ती ही नहीं है। इसका बल जलकर भस्म हो जाने पर भी इसके नशे के कारण बेसुधी नहीं हटती।

वतन से आइयां सैयां, सबे बांध के होड़।
सो याद न रह्या कछुए, इन नींदें दैयां सब तोड़।। ३ ।।

परमधाम से सब सखियां शर्त (होड़) लगाकर आई थीं कि हम संसार में जाकर धनी को नहीं भूलेंगे, परन्तु यहां आकर कुछ भी याद नहीं रहा। इस माया ने (माया के तनों ने) उन सबके विश्वास को तोड़ दिया।

तुमको नींद उड़ावने, मैं देऊं एक दृष्टांत।
तुम विध अगली देखके, जो कदी समझो इन भांत।। ४ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं आपके अज्ञान की नींद उड़ाने के लिए एक दृष्टान्त देती हूं, जिसकी हकीकत देखकर शायद आप समझ जाओगे कि यही हालत तुम्हारी है।

आइयां आस कातन की, करके उमेद दूनी।
किनहूं कात्या बारीक, किन रूईथें न करी पूनी।। ५ ।।

दुगना सूत कातने के वास्ते सखियां परमधाम से माया में आई थीं। उनमें से किसी ने बारीक काता और किसी ने रूई से पूनी भी नहीं बनाई!

नोट—सूत कातने का अर्थ यहां रूई कातने से नहीं है। माया में रहकर केवल अपने प्रीतम को याद करने से है।

आइयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर।
किन किन मिहीं कातिया, सांचा सनेह धर।। ६ ।।

सूत कातने के लिए सब सखियां शर्त लगाकर आई थीं। किसी-किसी ने दिल में सच्ची लगन (प्यार) लेकर बारीक सूत काता।

कोई बड़ाई ले बैठियां, सो गैयां आपको भूल।
उठियां अंग पछताए के, होए सूरत बेसूल।। ७ ।।

कोई सखी बड़प्पन लेकर बैठी रही और सूत कातना भूल गई। वह पीछे पछताकर उठेगी और उसकी शक्ल घबराई हुई होगी।

Nijanand App

किनहूं कात्या सोहाग का, सूत भर भर सेर।
कोई बैठियां पांउ पसार के, ले बैठी हिरदे अंधेर।। ८ ।।

किसी किसी ने अपने धनी को रिझाने के लिए किलो भर सूत काता। कोई तो माया में ही मग्न हो गई और धनी को भूल गई।

कोई तलबें तांत चढ़ावहीं, भले पाई ए बेर।
कोई नीचा सिर कर रही, कोई चढ़ियां सिर मेर।। ९ ।।

कोई सोचती हैं अच्छा समय मिला है और बड़ी चाहना से तकले पर सूत चढ़ाती हैं और कोई निर्लज्जता से सिर नीचा करके बैठी हैं। कोई अधिक सूत कातकर सिर ऊंचा किए बैठी हैं।

एक सूत देखे और के, उमर सब गई।
फेरा देवें रूपवंतियां, कबूं पूनी हाथ न लई।। १० ।।

किसी ने दूसरों के सूत देखने में ही उम्र गंवा दी (गुण-अवगुण देखती रहीं)। उन्होंने कईयों चरखे को खाली घुमाकर समय गंवा दिया और अपने हाथ में पूनी तक नहीं ली (कुछ किया ही नहीं)।

कोई सोए रहियां आतन में, उठियां तब उदमाद।
दुख पाया तब दिल में, जब सूत आया याद।। ११ ।।

कोई आतन भवसागर में आकर सो गईं। जब खुमारी लेकर उठीं और सूत की याद आई, तो दिल में दुःख पाया।

जिन दिल दे मिहीं कातिया, ढ़ील न करी एक पल।
सो ए उठी सैंयन में, हंसते मुख उजल।। १२ ।।

जिन्होंने एक पल को भी व्यर्थ नहीं गंवाया और दिल से बारीक सूत काता, वह जब परमधाम में उठेंगी तो उज्जवल मुख से हंसते-हंसते उठेंगी।

किनहूं ऊंचा कातिया, दे फारी फुकार।
सो ए घरों सैयनमें, हुई धंन धंन कातनहार।। १३ ।।

किसी ने बड़ी मेहनत से कीमती सूत काता। ऐसा कातने वाली अपने घर सखियों में धन्य-धन्य होगी।

जब सूत सैयां देखिया, तब जाहेर हुईयां सब कोए।
पर जिन कछूए न कातिया, छिपाए रही मुख सोए।। १४ ।।

जब सखियों ने एक-दूसरे के सूत को देखा, तब सब एक-दूसरे की हकीकत को जान गईं, पर जिन्होंने कुछ भी नहीं काता, वह मुंह छिपाकर खड़ी रहीं (शर्मसार हुईं)।

सूतवाली सोहागनी, तिन सोभा पाई घनी।
सैयां भी कहे धंन धंन, और दियो मान धनी।। १५ ।।

जिन सखियों ने यह अधिक सूत काता है उनको बहुत मान मिला। उनके धनी भी उनको धन्य-धन्य कहते हैं और सखियां भी धन्य-धन्य कहती हैं।

एक फेरे चरखा उतावला, दिल बांध तांत के साथ।
रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिनके हाथ।। १६ ।।

कुछ सखियां चरखे को बड़ी तेजी से घुमाती हैं और उनका चित्त सूत के साथ लगा है। यह रात को भी जागती हैं तो सूत उनके हाथ में ही रहता है।

Nijanand App

करे जो बातां बीच में, सो तांत न निकसे तिन।
पूनी रही तिन हाथ में, बैठी फिरावे मन।। १७ ।।

जो बीच में बातें करती रहती हैं उनके हाथ से सूत निकलता ही नहीं है। हाथ में उनके पूनी ही रह जाती है। इसी में अपने मन को लगाए रहती हैं।

फजर हुई बीच सैयनमें, मिल बातां करसी सब।
जिन कछुए न कातिया, तिन कहा हाल होसी तब।। १८ ।।

प्रातः काल में जब सखियां मिलकर बातें करेंगी तब जिन्होंने कुछ नहीं काता उनका क्या हाल होगा?

न कछू कात्या रात में, न कछू कात्या दिन।
सो वतन बीच सैयनमें, मुख नीचा होसी तिन।। १९ ।।

जिन्होंने दिन में या रात में कुछ भी सूत नहीं काता है, घर में सखियों के बीच बैठकर उनके मुख नीचे (शर्मिंदा) होंगे।

जो मोटा या बारीक, तिन भी पाया मोल।
पर जिन कछुए न कातिया, तिनका कछुए न सूल।। २० ।।

जिन्होंने मोटा या बारीक कुछ भी सूत काता है, उन्हें भी कुछ मूल्य (मोल) मिला, जिन्होंने कुछ भी नहीं काता उनकी क्या दशा होगी?

हुकम धनी के बिध बिध, अनेक किए पुकार।
जिन सुनी न तिन की वतन में, बातें हुई बिकार।। २१ ।।

धनी के हुकम से तरह-तरह से सबको समझाया गया, पर जिन्होंने उनकी बातों को नहीं सुना, घर (परमधाम) में वह बुरी हालत में होंगी, उनका रूप बिगड़ा हुआ होगा।

सुनते पुकार धनीयकी, काल गया दिन ले।
पीछे मुख नीचा होएसी, क्यों न कात्या चित दे।। २२ ।।

धनी की वाणी सुनकर भी जिन्होंने उम्र गंवाई, उनका मुख शर्म से नीचे होगा। वह पश्चाताप करेंगी कि हमने चित्त देकर सूत क्यों नहीं काता?

जिनो आज न कातिया, करसी याद ए दिन।
जब बातां करसी सोहागनी, मिलकर बीच वतन।। २३ ।।

जिन्होंने आज का दिन गंवा दिया और सूत नहीं काता, वे सखियों के बीच बैठकर अपनी भूल पर पछताएंगी।

जो कछुए न समझी, हाथ न लई पूनी।
आई थी उमेद में, पर उठी अलूनी।। २४ ।।

जिन्होंने धनी को कुछ भी नहीं पहचाना उन्होंने हाथ में पूनी भी नहीं ली, वह घर से बड़ी चाहना लेकर आई थीं, पर उदासी के साथ उठीं।

एक लेसी सोहाग सुलतान का, सोई सोहागिन।
सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच सैयन।। २५ ।।

एक धनी का प्यार पाएगी। वही सुहागिनी है और वही सिर ऊंचा कर अपनी सखियों में बात करेगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ६१५ ।।

Nijanand App